संस्कार एवं प्रत्यय : ह्यूम

ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक हैं। वे यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि अनुभववाद का सम्बन्ध किसी प्रकार के तत्ववाद (तत्वमीमांसा) से नहीं है। अनुभववाद शुद्ध ज्ञानमीमांसा है है जिससे किसी भौतिक या आध्यात्मिक सत्ता की सिद्धि नहीं होती है। अनुभववादी होने के कारण ह्यूम भी अनुभव को ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र यथार्थ स्त्रोत मानते हैं। इनके अनुसार हमारा सारा ज्ञान इन्द्रिय प्रत्यक्षों के माध्यम से होता है।

ह्यूम के अनुसार इन्द्रिय प्रत्यक्ष के दो घटक हैं- (i) संस्कार (ii) प्रत्यय। संस्कार शब्द पहली बार ह्यूम के दर्शन में प्रयुक्त किया गया है, परन्तु इसका अर्थ नवीन नहीं है। लॉक ने संवेदन व स्वसंवेदन को जिस अर्थ में प्रयुक्त किया है, उसी अर्थ में यहाँ ह्यूम ने संस्कार शब्द का प्रयोग किया है। लॉक ने पंचज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभूतियों को संवेदन कहा था तथा अन्तःकरण की अनुभूतियों को स्वसंवेदन कहा था ~~लॉक~~ ने इन दोनों को मिलाकर संस्कार कहते हैं।

ह्यूम के दर्शन में संस्कार वे प्रत्यक्ष हैं जो सर्वाधिक तेजी के साथ हमारे मानस में आते हैं तथा हमारी चेतना में प्रवेश कर जाते हैं। ह्यूम के शब्दों में, संस्कार से पद से मेरा आशय उन सभी सजीव अनुभूतियों से है जो हमें इन्द्रिय-अन्य प्रत्यक्ष से होती हैं अथवा इच्छा, अनिच्छा, राग, द्वेष आदि के रूप में प्रकट होती है"। वस्तुतः ये संस्कार ही ज्ञान के मूल निर्मायक तत्व हैं। संस्कारों की प्राप्ति के पश्चात प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है। संस्कार प्रत्ययों की अपेक्षा प्राथमिक एवं पूर्ववर्ती होते हैं। ये प्रत्ययों की अपेक्षा सामान्यतः अधिक तीव्र, अधिक स्पष्ट, अधिक सजीव एवं अधिक प्रबल होते हैं। ये संस्कार एक-दूसरे से पृथक-पृथक, मौलिक एवं विशिष्ट होते हैं।

Scanned with CamScanner

ह्यूम के अनुसार ये संस्कार सरल एवं निरवयव हैं तथा किन्हीं भी दो संस्कारों के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं है। संस्कारों के अन्तर्गत ह्यूम ने सभी प्रकार की अनुभूति (संवेदना, भावना, संवेग आदि) को स्वीकार किया है।

प्रत्यय संस्कारों के प्रतिबिम्ब या अनुकृतियां है। ये संस्कारों की अपेक्षा सामान्यतः कम प्रबल, कम अस्पष्ट एवं कम सजीव होते हैं। यहाँ प्रत्यय से ह्यूम का तात्पर्य स्मृति, चिंतन, तर्कणा इत्यादि रूपों में संस्कारों की धूमिल प्रतिमाओं से है। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं - सरल प्रत्यय और जटिल प्रत्यय।

सरल प्रत्यय के मूल में कोई न कोई संस्कार अवश्य होता है, इसलिए कोई भी ~~सरल~~ प्रत्यय जन्मजात नहीं होता। परन्तु जटिल प्रत्ययों के निर्माण में लॉक से भिन्न ह्यूम यह मानते हैं कि कुछ संदर्भों में बिना सरल प्रत्ययों के भी जटिल प्रत्ययों का निर्माण हो सकता है। जैसे - सोने का पहाड़।

ह्यूम के अनुसार प्रत्येक संस्कार परस्पर पृथक-पृथक, विशिष्ट, स्वतंत्र एवं अणु रूप होता है। यहाँ इसके दो संदर्भ हैं- i) इसका तात्पर्य यह है कि संस्कारों के मध्य कोई अनिवार्य संबंध नहीं होता। इनके बीच कोई तार्किक निगमन संभव नहीं है। ii) चूँकि अनुभव में संस्कार मिलते हैं और संस्कार पृथक-पृथक, स्वतंत्र एवं अणु रूप में होते हैं। अतः यहाँ मनोवैज्ञानिक अणुवाद की भी स्थापना होती है। प्रत्यक्ष के अणुओं से ही हमारा ज्ञान निर्मित है।

* <u>प्रत्ययों के मध्य संबंध</u>

ह्यूम के मत में प्रत्ययों के बीच कोई आंतरिक या अनिवार्य संबंध नहीं होकर बाह्य संबंध ही संभव है। ऐसे संबंध को ह्यूम ने साहचर्य सम्बन्ध कहा है। मानव-मन तीन नियमों के आधार पर साहचर्य संबंध स्थापित करता है। ये नियम है -

i) देश और काल में सामीप्यता : जब दो प्रत्ययों में देश और काल के दृष्टिकोण से निकटता होती है तो फिर उन दोनों में संबंध की

Scanned with CamScanner

स्थापना कर ली जाती है। दूसरे शब्दों में यदि एक घटना के बाद उसी स्थान पर उसी समय कोई दूसरी घटना घट जाती है तो फिर उसमें देश और काल के दृष्टिकोण से निकटता मानी जाती है।

(ii) सादृश्यता : दो प्रत्ययों में सादृश्यता तब मानी जाती है जब दोनों में समानता हो। दो वस्तुओं में समानता होने पर एक को देखकर दूसरे का भी प्रत्यय उत्पन्न हो जाता है। इसमें मूल वस्तु और चित्र में समानता के कारण एक को देखकर दूसरे का विचार (प्रत्यय) मन में आता है। जैसे - किसी मित्र के चित्र को देखकर मित्र का स्मरण हो जाना।

(iii) कारण - कार्य संबंध : प्रत्ययों में कारण - कार्य संबंध भी होता है परन्तु कारण - कार्य में कोई अनिवार्य संबंध नहीं होता। कारण - कार्य में पूर्ववर्ती एवं परवर्ती होने का संबंध है। यह संबंध एक सांयोगिक - सापेक्ष्य संबंध है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ह्यूम कारण - कार्य संबंध का खण्डन नहीं करते, बल्कि उनके मध्य स्वीकार्य अनिवार्यता की अवधारणा का खण्डन करते हैं।

इन तीनों में से किसी के भी होने पर प्रत्ययों में संबंध स्थापित हो जाती है। ये तीनों तार्किक नियम नहीं हैं। इनमें न तो अनिवार्यता है और न ही वस्तुनिष्ठता। इनमें केवल आत्मगत संबंध है, जो कल्पना - आधारित है। कल्पना - आधारित, कल्पना निर्मित इन्हीं तीनों नियमों के आधार पर प्रत्ययों एवं संस्कारों के मध्य संबंध स्थापित किया जाता है तथा आनुभविक ज्ञान की प्राप्ति की जाती है।

* प्रत्यय और संस्कार में अन्तर

1. संस्कार मूल तथा प्राथमिक प्रत्यक्ष हैं जबकि प्रत्यय गौण तथा द्वितीयक प्रत्यक्ष हैं।
2. संस्कार प्रत्ययों के आधार हैं अर्थात् प्रत्ययों को संस्कारों की आवश्यकता होती है जबकी संस्कारों को प्रत्ययों से कोई मतलब नहीं होता।

Scanned with CamScanner

3. संस्कार हमारी तत्कालिक अनुभूति के प्रकट है अर्थात अनुभूति के साथ ही हमें तुरंत इसका बोध होता है जबकि प्रत्यय अनुभूति के पश्चात् बनते हैं।

4. प्रत्यय और संस्कार में अंतर तीव्रता और सजीवता का भी है। प्रत्यय कम तीव्र एवं सजीव होते हैं जबकि संस्कार अधिक तीव्र और सजीव होते हैं। वैसे कभी-कभी ऐसे भी होता है कि प्रत्ययों की प्रबलता और उग्रता संस्कारों के स्तर की ही हो जाती है जैसे ज्वर या पागलपन या स्वप्न की अवस्था में। किन्तु ये अपवाद हैं।

5. ह्यूम यह भी कहते हैं कि इन दोनों में अन्तर स्पष्ट है। हर कोई इस बात का अनुभव करता है कि आग को छूने से जो जलन हाथ में होती है उसकी तीव्रता उससे कहीं अधिक होती है जब हम इसी अनुभूति का स्मरण करते हैं (अर्थात् प्रत्यय बनते हैं)। यही बात मानसिक प्रत्ययों के सम्बन्ध में भी सत्य हैं। क्रोध करते समय जो हमें अनुभूति है, वह उसका स्मरण करते समय उतनी तीव्र नहीं होती।

* ✓ कांट के अनुसार हमारी बुद्धि में कुछ ऐसे प्रत्यय निहित होते हैं जो अनुभव-आधारित नहीं है अर्थात उनका न तो हमें संस्कार मिलता है न ही प्रत्यय। जैसे- अनन्त का प्रत्यय।

✓ ह्यूम ने प्रत्ययों को संस्कारों की अनुकृति माना है। इसके लिए उनकी पहली कसौटी है कि संस्कार प्रत्ययों की अपेक्षा अधिक सजीव और सबल होते हैं। पर स्वयं ह्यूम ने बताया है कि ज्वर, पागलपन, भ्रांति आदि में संस्कारों की अपेक्षा प्रत्यय ही अधिक सजीव और स्पष्ट होते है।

ह्यूम ने अपने ज्ञान सिद्धांत में दो प्रकार के ज्ञान में भेद किया है; यही विभाजन कालांतर में विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक कथनों के भेद के रूप में स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया।

Scanned with CamScanner